राम मूरत 'राही'

ई-मेल:rammooratrahi@gmail.com

संतुलन

एक समुदाय के लोग शांत तरीके से धार्मिक रैली निकालते हुए जब दूसरे धर्म वालों के इलाके से गुजर रहे थे, तब समुदाय विशेष के लोगों ने घर की छतों से उन पर पथराव शुरू कर दिया। रैली की व्यवस्था देख रहे थानेदार ने तुरंत कार्रवाई करते हुए पच्चीस उपद्रवियों को, जिसमें महिलाएँ भी शामिल थी, गिरफ्तार किया। गिरफ़्तारी के कुछ देर बाद ही थानेदार के मोबाइल की रिंगटोन बज उठी। उठाते ही उधर से आवाज आई—

"मैं...मंत्री बोल रहा हूँ। आपने पत्थरबाजों पर त्वरित कार्रवाई कर काबिले-तारीफ काम किया है, लेकिन...।"

"लेकिन क्या सर?"

"रैली निकालने वालों में से भी कुछ लोगों को गिरफ्तार कीजिए।"

"उन्हें क्यों सर, उनका तो कोई दोष नहीं है? रैली के साथ-साथ मैं भी चल रहा था।"

"मैं कुछ नहीं जानता। तुम चार-पाँच लोगों पर तोड़-फोड़ और आगजनी का आरोप लगाकर तुरंत गिरफ्तार कर मुझे रिपोर्ट करो।" मंत्री ने आदेश दिया।

"मैं कतई ऐसा नहीं कर सकता सर।" थानेदार ने निडर होकर कहा।

"अरे भई... तुम समझते क्यों नहीं हो? संतुलन बनाए रखने के लिए ऐसा करना बहुत जरूरी है। हवालात में जिन्हें तुमने बंद कर रखा है, वे हमारे वोटर हैं।" नरम आवाज में मंत्री ने कहा।

"माफ कीजिए सर, मैं हरगिज़ ऐसा नहीं कर सकता।" थानेदार अपनी बात पर अडिग रहा।

"ठीक है, अगर तुम ऐसा नहीं कर सकते हो, तो देखो, मैं क्या करता हूँ।" गुस्से में इतना कहकर मंत्री ने फोन काट दिया।

कुछ समय बाद ही थानेदार का तबादला दूर-दराज क्षेत्र में कर दिया गया।

राम मूरत 'राही'

मशीन

एक प्रायवेट कंपनी में पहली बार असली-नकली नोट जाँच करने की मशीन आई हुई थी। छोटे-बड़े सभी कर्मचारी देखने के लिए ऑफिस में इकट्ठा हुए थे। कुछ कर्मचारी अपने पर्स से नोट निकालकर जाँच करवा रहे थे। तभी कारखाने में एक बुजुर्ग चायवाला चाय देने आया, तो उसने भीड़ देखकर चपरासी से पूछा—"क्या हुआ बेटा, यहाँ भीड़ क्यों लगी हुई है?"

"काका! असली-नकली नोट जाँच करने की मशीन आई हुई है। इसलिए भीड़ लगा रखी है और अपने-अपने नोट की जाँच भी करवा रहे हैं।" चपरासी ने थोड़ा रुककर बुजुर्ग चायवाले से मुस्कुराते हुए कहा—"काका ! आप भी घर से सारे नोट लाकर जाँच करवा लो। कहीं धोखा न खा जाना।

"बेटा! मुझे नोटों की जाँच नहीं करवाना है। हाँ अगर..."

"अगर क्या काका?" चपरासी ने उत्सुकता से पूछा।

"बेटा, अगर असली-नकली इंसानों की जाँच करने की मशीन आये तो बताना, क्योंकि मैंने नोटों से नहीं, इंसानों से धोखा खाया है।" इतना कहकर वह बुजुर्ग चायवाला आगे बढ़ गया।

कैसे बेच दूँ

"अरे विमल जी! इस बड़े बैग में क्या ले आये ?" वरिष्ठ साहित्यकार विमल जी को एक बड़े बैग में कुछ लाया देखकर लायब्रेरियन ने उनसे पूछा।

विमल जी ने बैग उनके सामने टेबल पर रखते हुए कहा, "सुदेश जी, घर में रखी सारी पुस्तकें ले आया हूँ। इनमें कुछ मेरी भी हैं और दूसरे छोटे-बड़े लेखकों की भी हैं।"

"लेकिन क्यों ले आये?" लायब्रेरियन ने बैग में रखी पुस्तकों को उलट-पुलट कर देखते हुए प्रश्न किया।

"सुदेश जी, मेरी ज़िंदगी का कोई भरोसा नहीं, कब ऊपर वाले का बुलावा आजाए। आजकल बीमार रहता हूँ। वैसे मैंने घर वालों को बोल रखा था कि मैं मर जाऊँ तो इसे किसी पुस्तकालय को भेंट कर देना। लेकिन मुझे उन पर अब भरोसा नहीं रहा। क्योंकि वे हजार-पाँच सौ रुपयों की लालच में कबाड़ी वाले को बेच सकते हैं।" विमल जी ने कुर्सी पर बैठते हुए कहा।

"विमल जी, मैं जानता हूँ कि आपकी आर्थिक स्थिति ठीक नहीं है। फिर आप इन्हें किसी कबाड़ वाले को बेच क्यों नहीं देते? हजार-पाँच सौ रुपये मिल जाएँगे, तो आप के कुछ काम आएँगे।"

"सुदेश जी, ये सारी किताबों में माता सरस्वती का वास है, तो भला मैं इन्हें चन्द रुपयों के लिए कैसे बेच सकता हूँ?" इतना कहकर विमल जी ने सारी पुस्तकों पर एक प्यारभरी दृष्टि डाली और फिर उठकर घर की ओर चल पड़े।